भा.क.नि.
CCI
मिनी रत्न

सोमनाथ

आज़ादी का अमृत महोत्सव

छ: माही हिन्दी पत्रिका अंक 1 : जुलाई 2022 - दिसंबर 2022



भारतीय कपास निगम लिमिटेड

THE COTTON CORPORATION OF INDIA LIMITED

(वस्त्र मंत्रालय – भारत सरकार का उपक्रम)

(GOVERNMENT OF INDIA UNDERTAKING – MINISTRY OF TEXTILES)

शाखा कार्यालय/BRANCH OFFICE : राजकोट/RAJKOT



संरक्षक की कलम से .....

प्रिय साथियों ,

मुझे यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता हो रही है कि शाखा कार्यालय राजकोट अपनी पत्रिका सोमनाथ अंक 1 का प्रकाशन करने जा रहा है इस उपक्रम में हमे आप सभी के सहयोग की अपेक्षा है। राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार मे पत्रिकाओ की अहम भूमिका होती है। किसी भी संगठन के सर्वांगीण विकास के लिए भाषा के प्रति जागरूक होना आवश्यक है। भाषा सोच व समाज से जुड़ी है, इसलिए यह सरल या कठिन नहीं होती बल्कि शब्द परिचित या अपरिचित होते है। जितना ही बोले जाते है, उतना ही सहज हो जाते है। अतः यह हमारा संविधानिक कर्तव्य है कि हमे कार्यालय मे राजभाषा के कार्यो को अधिक से अधिक बढ़ाना है । इस पत्रिका के माध्यम से निगम के अधिकारियों /कर्मचारियों के बीच एक सेतु तैयार करना है जिससे उन्हें राजभाषा मे कार्य करने मे हो रही कठिनाइयों को दूर किया जा सके। सोमनाथ पत्रिका ने निगम के कर्मचारियों कि प्रतिभावों को मंच देने का बीड़ा उठाया है। मै इस सृजनशील प्रयास को अपनी हार्दिक शुभकामनाएँ देता हूँ।

स्वप्नील वि. दडमल

उप महा प्रबंधक

संपादकीय



भाषा हमारी संस्कृति, सभ्यता, भावनाओं, सोच, दृष्टि, रीति–रिवाजों आदि परंपराओं की वाहक है। भारत एक विशाल और बहुभाषी देश है। यहाँ विभिन्न प्रान्तो मे अलग – अलग भाषाएँ बोली जाती है। इसलिए अधिक भारतीय स्तर पर विचारों के आदान – प्रदान के लिए एक ऐसी भाषा की आवश्यकता महसूस की गई, जिसे देश मे सबसे अधिक लोग बोल और समझ सकते हो इसे ध्यान मे रखकर काफी चिंतन – मनन के उपरांत हमारे देश के महापुरुषों ने संपर्क भाषा के रूप मे हिन्दी को अपनाया। सर्वाधिक लोगों द्वारा बोली और समझी जानेवाली भाषा होने के कारण संविधान सभा के सदस्यों ने इसे राजभाषा के रूप मे स्वीकार किया। परंतु भाषा कानून मात्र से नहीं चलती बल्कि प्रेम एवं सौहार्द से पल्लवित और पुष्पित होती है। इस राष्ट्र प्रेम और भाषा प्रेम को जन-जन तक पहुचाने के लिए निगम ने सोमनाथ पत्रिका की शुरुवात की है।

आशा है कि इस अंक को पाठकगण रुचिकर एवं उपयोगी पाएंगे। प्रबुद्ध पाठकों का सहयोग व उनकी प्रतिक्रिया इस पत्रिका को और अधिक उपयोगी बनाने मे अपनी एहम भूमिका अदा करेगी। इस अंक कि प्रतिक्रिया और बहुमूल्य सुझाव हमारे लिए मूल्यवान एवं आशीष है। अत: पाठकों से अपने विचार भेजने के लिए सादर अनुरोध है।

हार्दिक शुभकामनाओं के साथ.....।

दीपक अग्रवाल

सी. ए. दीपक अग्रवाल

वरिष्ठ प्रबंधक (वित्त/लेखा)

अनुक्रमणिका

राजभाषा संगोष्ठी का आयोजन 17.08.2022	05
हिन्दी दिवस / पखवाड़ा कार्यक्रम का आयोजन - 2022	06 - 07
हिन्दी कार्यशाला का आयोजन 21.09.2022	08
राजभाषा संगोष्ठी का आयोजन 24.11.2022	09
हिन्दी कार्यशाला का आयोजन 28.12.2022	10
पिता (कविता)	11
सोमनाथ मंदिर का इतिहास (लेख)	12 - 13
सपने (कविता)	14
जिंदगी का हौसला (कविता)	15
जीवन साथी (कविता)	16
बच्चों में बढ़ता मोबाईल का इस्तेमाल	17
कपास का गर्वगान (कविता)	18
समय की धारा (कविता)	19
युवा (कविता)	20
भाषा की विविधता (लेख)	21
माँ (कविता)	22
राजभाषा की व्यथा (लेख)	23
समर्पण (सुभद्रा कुमारी चौहान)	24
अमावस्या की रात्रि (मुंशी प्रेमचंद)	25 - 30
सतर्कता जागरूकता सप्ताह कार्यक्रम 2022	31 - 33
भारतीय कपास निगम, राजकोट की मुहिम – भारतीय कपास निगम किसानों का दोस्त, किसानों के घर तक	34 - 36



राजभाषा संगोष्ठी का आयोजन दिनांक 17.08.2022

भारतीय कपास निगम लिमिटेड, शाखा कार्यालय में सोमवार दिनांक 17.08.2022 को शाम 03:45 बजे श्री स्वप्नील वि. दडमल, उप महा प्रबन्धक महोदय की अध्यक्षता में "हिंदी का बढ़ता वर्चस्व" इस विषय पर राजभाषा संगोष्ठी आयोजित की गई। इस अवसर पर संबोधित करते हुए अध्यक्ष महोदय ने "हिंदी का बढ़ता वर्चस्व" के संबंध में बताया गया।

अध्यक्ष महोदय द्वारा बताया गया कि कोई भी भाषा या बोली एक व्यक्ति द्वारा अपनी बात को दूसरे व्यक्ति तक पहुंचाने का एक माध्यम है, जिसे मानव सदियों से इस्तेमाल करता आ रहा है। इस धरती पर मानव सभ्यताओं के फलने-फूलने के साथ ही साथ असंख्य भाषाएं व बोलियां अस्तित्व में आयी है। इनमें से कई भाषाएं सभ्यताओं के पतन के साथ ही खत्म हो गई, लेकिन कई सभ्यताएं और भाषाएं आज भी खूब फल-फूल रही हैं। हिंदी भी वैश्विक पटल पर फलती-फूलती भाषाओं का जीवंत उदाहरण है। हिंदी भाषा का वर्चस्व सिर्फ भारत में ही नहीं है, भारत के अलावा इसे नेपाल, मॉरिशस, फिजी, सूरीनाम, यूगांडा, दक्षिण अफ्रीका, कैरिबियन देशों, ट्रिनिदाद एवं टोबेगो और कनाडा आदि में बोलने वालों की अच्छी खासी संख्या है। इसके अलावा इंग्लैंड, अमरीका, मध्य एशिया में भी हिंदी भाषा के उपयोगकर्ताओं की संख्या दिनप्रति दिन बढ़ती ही जा रही है। वर्तमान सूचना प्रौद्योगिकी का युग है और इसमें प्रचार-प्रसार का प्रमुख माध्यम इंटरनेट ही है। वर्तमान परिप्रेक्ष्य में किसी भी भाषा की सार्थकता व प्रमाणिकता को इंटरनेट से भी परखा जाने लगा है। हिंदी का प्रचार-प्रसार इंटरनेट पर खूब फलता-फूलता दिख रहा है। इंटरनेट पर हिंदी सामग्री का बाजार हर वर्ष 95 प्रतिशत बढ़ रहा है।

इस अवसर पर श्री विजय वर्मा, सहायक प्रबन्धक (विप) द्वारा अपने विचार व्यक्त करते हुए बताया कि निष्कर्ष के तौर पर उम्मीद जताई जा रही है कि मॉरिशस के हिंदी उत्थान सत्रों में की गई अनुशंसाओं द्वारा हिंदी का मार्ग इंटरनेट की दुनिया पर सजगता से प्रशस्त होगा। इसलिए मॉरिशस को 'लघु भारत' भी कहा जाता है। मॉरिशस में विश्व हिंदी सम्मेलन का केंद्रीय सचिवालय है, जहां से विश्व हिंदी समाचार का प्रकाशन होता है।

इस संगोष्ठी का संचालन श्रीमती ज्योति त्रिवेदी, कनिष्ठ सहायक (सा./हिन्दी) द्वारा किया गया तथा आभार ज्ञापन श्री दीपक अग्रवाल, व. प्रबंधक (लेखा/वित्त) द्वारा किया गया।

***

हिंदी दिवस/पखवाडा – वर्ष 2022-23

भारतीय कपास निगम लिमिटेड, शाखा द्वारा दिनांक 14.09.2022 से 29.09.2022 तक हिंदी पखवाडा का आयोजन किया गया। जिसमे विविध प्रतियोगिताओं तथा कार्यक्रम का आयोजन किया गया। जैसे की प्रश्नमंच, अंताक्षरी, वाद- विवाद प्रतियोगिता एवं निबंध प्रतियोगिता आयोजित की गई।



हिंदी पखवाडा का समापन समारोह अवसर पर केंद्रीय विद्यालय, राजकोट के प्राचार्य श्री जी. आर. मीणा को मुख्य अतिथि के रूप में आमंत्रित किया गया। मुख्य अतिथि का स्वागत करते हुए उप महा प्रबन्धक महोदय।



दिनांक 19.09.2022 को प्रश्नमंच प्रतियोगिता आयोजित की गई। इस प्रतियोगिता का संचालन श्री स्वप्नील वि. दडमल, उप महा प्रबंधक द्वारा किया गया।



दिनांक 20.09.2022 अंताक्षरी प्रतियोगिता आयोजित की गई। इस प्रतियोगिता का संचालन श्री स्वप्नील वि. दडमल, उप महा प्रबंधक की देखरेख में किया गया।



दिनांक 22.09.2022 निबंध प्रतियोगिता आयोजित की गई। इस प्रतियोगिता का भी संचालन श्री स्वप्नील वि. दडमल, उप महा प्रबंधक की देखरेख में किया गया।

***

हिन्दी कार्यशाला का आयोजन दिनांक 21.09.2022

भारतीय कपास निगम लिमिटेड, शाखा कार्यालय में दिनांक 21.09.2022 को शाम 04:00 बजे श्री स्वप्नील वि. दडमल, उप महा प्रबन्धक महोदय की अध्यक्षता में "हिन्दी भाषा के वैश्विक संदर्भ की विशेषताएँ" इस विषय पर कार्यशाला आयोजित की गई।

सर्वप्रथम अध्यक्ष महोदय द्वारा उपस्थित सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों का स्वागत किया गया। इस अवसर पर संबोधित करते हुए अध्यक्ष महोदय द्वारा बताया गया कि आखिर, वे कौन सी विशेषताएँ हैं जो किसी भाषा को वैश्विक संदर्भ प्रदान करती हैं। ऐसा करके हम हिंदी के विश्व संदर्भ का वस्तुपरक विश्लेषण कर सकते हैं। जब हम हिंदी को विश्व भाषा में रूपांतरित होते हुए देख रहे हैं और यथावसर उसे विश्वभाषा की संज्ञा प्रदान कर रहे हैं, तब यह जरूरी हो जाता है कि हम सर्वप्रथम विश्वभाषा का स्वरूप विश्लेषण कर लें। संक्षेप में विश्वभाषा के निम्नलिखित लक्षण निर्मित किए जा सकते हैं। जैसे कि हिन्दी भाषा में साहित्य-सृजन की प्रदीर्घ परंपरा हो और प्राय: सभी विधाएँ वैविध्यपूर्ण एवं समृद्ध हों। हिन्दी भाषा में सृजित कम-से-कम एक विधा का साहित्य विश्व स्तरीय हो। भाषा की शब्द-संपदा विपुल एवं विराट हो तथा वह विश्व की अन्य बड़ी भाषाओं से विचार-विनिमय करते हुए एक -दूसरे को प्रेरित एवं प्रभावित करने में सक्षम हो।

इस अवसर पर श्री विजय वर्मा, सहायक प्रबन्धक (विप) द्वारा अपने विचार व्यक्त करते हुए मौजूदा समय में हिंदी जब हम उपर्युक्त प्रतिमानों पर हिंदी का परीक्षण करते हैं तो पाते हैं कि वह न्यूनाधिक मात्रा में प्राय: सभी निष्कर्षों पर खरी उतरती है। आज वह विश्व के सभी महाद्वीपों तथा महत्त्वपूर्ण राष्ट्रों- जिनकी संख्या लगभग एक सौ चालीस है- में किसी न किसी रूप में प्रयुक्त होती है। वह विश्व के विराट फलक पर नवल चित्र के समान प्रकट हो रही है। आज वह बोलने वालों की संख्या के आधार पर चीनी के बाद विश्व की दूसरी सबसे बडी भाषा बन गई है।

इस कार्यशाला का संचालन श्रीमती ज्योति त्रिवेदी, कनिष्ठ सहायक (सा./हिन्दी) द्वारा किया गया तथा आभार ज्ञापन श्री दीपक अग्रवाल, वरिष्ठ प्रबन्धक (लेखा/वित्त) द्वारा किया गया।

***

राजभाषा संगोष्ठी का आयोजन दिनांक 24.11.2022

भारतीय कपास निगम लिमिटेड, शाखा कार्यालय में गुरुवार दिनांक 24.11.2022 को शाम 03:45 बजे श्री स्वप्नील वि. दडमल, उप महा प्रबन्धक महोदय की अध्यक्षता में "कार्यालयीन कार्य में ई-ऑफिस का महत्व" इस विषय पर राजभाषा संगोष्ठी आयोजित की गई।

अध्यक्ष महोदय द्वारा बताया गया कि ई-ऑफिस का उद्देश्य अधिक प्रभावी और पारदर्शी अंतः और अंतर-सरकारी प्रक्रियाओं की शुरुआत करके शासन का समर्थन करना है। ई-ऑफिस का उद्देश्य सभी सरकारी कार्यालयों के कामकाज को सरल, उत्तरदायी, प्रभावी एवं पारदर्शी बनाना है। ओपन आर्किटेक्चर जिस पर ई-ऑफिस बनाया गया है, इसे एक पुन: प्रयोज्य ढांचा और एक मानक पुन: प्रयोज्य उत्पाद बनाता है, जिसे केंद्र, राज्य और जिला स्तर पर सरकारों में दोहराया जा सकता है। उत्पाद एक ही ढांचे के तहत स्वतंत्र कार्यों और प्रणालियों को एक साथ लाता है।

इस अवसर पर श्रीमती प्राजक्ता वि. गोल्हार, सहायक प्रबन्धक (विप) द्वारा अपने विचार व्यक्त करते ई-ऑफिस के लाभ बताए। जो निम्न प्रकार है :-

01.पारदर्शिता बढ़ाना – फाइलों को ट्रैक किया जा सकता है, और उनकी स्थिति हर समय सभी को पता होती है।
02.जवाबदेही बढ़ाना – गुणवत्ता की जिम्मेदारी और निर्णय लेने में तेजी की निगरानी करना आसान है।
03.डेटा सुरक्षा और डेटा की प्रमाणिकता का आश्वासन देना।
04.सरकार के पुन: आविष्कार और पुनर्रचना के लिए एक मंच प्रदान करना।
05.अनुत्पादक प्रक्रियाओं से कर्मचारियों की ऊर्जा और समय को मुक्त करके नवाचार को बढ़ावा देना।
06.सरकार की कार्य संस्कृति और नैतिकता को बदलना।
07.कार्यस्थल और प्रभावी ज्ञान प्रबंधन में अधिक सहयोग को बढ़ावा देना।

इस संगोष्ठी का संचालन श्रीमती ज्योति त्रिवेदी, कनिष्ठ सहायक (सा./हिन्दी) द्वारा किया गया तथा आभार ज्ञापन श्री दीपक अग्रवाल, व. प्रबन्धक (लेखा/वित्त) द्वारा किया गया।

***

हिंदी कार्यशाला का आयोजन दिनांक 28.12.2022



भारतीय कपास निगम लिमिटेड, शाखा कार्यालय में दिनांक 28.12.2022 को शाम 04:00 बजे श्री स्वप्नील वि. दडमल, उप महा प्रबन्धक महोदय की अध्यक्षता में "जेम पोर्टल के उद्देश एवं लाभ" इस विषय पर कार्यशाला आयोजित की गई।

सर्वप्रथम अध्यक्ष महोदय द्वारा उपस्थित सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों का स्वागत किया गया। इस अवसर पर संबोधित करते हुए अध्यक्ष महोदय द्वारा जेम पोर्टल के उद्देश बताते हुए कहा कि GeM का फुल फॉर्म "गवर्नमेंट ई मार्केटप्लेस" है। नतीजतन यह पोर्टल विभिन्न संगठनों और विभागों के लिए सामानों की बिक्री और खरीद के लिए एक केंद्रित और खुले ऑनलाइन मार्केटप्लेस के रूप में कार्य करता है। इस बाज़ार में कोई भी निजी या सरकारी संस्था व्यापार कर सकती है। इसलिए सरकार ने सरकारी अधिकारियों के लिए सार्वजनिक क्षेत्र में विभिन्न दिन-प्रतिदिन के सरकारी संगठनों में भाग लेने के लिए इस वेबसाइट का निर्माण किया। भ्रष्टाचार का उन्मूलन, साथ ही सरकारी रोजगार और खरीद में पारदर्शिता और प्रभावशीलता में वृद्धि, जेम पोर्टल के मुख्य उद्देश्य हैं। संघीय, राज्य और स्थानीय स्तर पर सरकारी एजेंसियों के लिए बड़ी मात्रा में सेवाओं और सामानों को खरीदने के लिए जेम पोर्टल एक ऑनलाइन प्लेटफ़ॉर्म प्रदान करता है|

इस अवसर पर श्रीमती प्राजक्ता वि. गोल्हार, सहायक प्रबन्धक (विप) द्वारा जेम पोर्टल के लाभ बताते हुए कहा कि GeM पोर्टल पर उत्पाद किस्मों की एक उच्च श्रेणी उपलब्ध है जो ग्राहकों की पसंद को बढ़ाती है, GeM पोर्टल पर वस्तुओं के साथ-साथ सेवाओं की अलग-अलग श्रेणियों के लिए मूल्य और विभिन्न उत्पादों की सूची की पारदर्शिता पायी जाती है, कीमत की तुलना की जाती है। GeM पोर्टल आसान वापसी नीति की सुविधा प्रदान करता है। सेवाओं के लिए एकाधिक परेषिती (Multiple consignee) चयन की अनुमति देता है।

इस कार्यशाला का संचालन श्रीमती ज्योति त्रिवेदी, कनिष्ठ सहायक (सा./हिन्दी) द्वारा किया गया तथा आभार ज्ञापन श्री दीपक अग्रवाल, वरिष्ठ प्रबन्धक (लेखा/वित्त) द्वारा किया गया।

***

"पिता"

आज भी वो प्यारी मुस्कान याद आती है,

जो मेरी शरारतों से पापा के चेहरे पर खिल जाती थी।

अपने कंधे पर बैठकर कभी वो मुझे दुनिया की सैर कराते थे,

जहा भी जाते मेरे लिए ढेर सारे तोहफे लाते थे।

मेरे हर जन्मदिन पर वो मुझे मंदिर ले जाते थे,

मेरे हर रिज़ल्ट का बखान पूरी दुनिया में कर जाते थे।

मेरी जिंदगी के सारे सपने उनकी आँखों में पल रहे थे,

मेरे लिए खुशियों का आशियाना वो हर पल बुन रहे थे।

मेरे सपने उनके साथ चले गए मेरे पापा मुझे छोड़ गए,

अब आँखों में शरारत नही बस आसूं ही दिखते हैं।

पापा आप हो तो जिंदगी में जान हैं,

वरना आपके बिना जिंदगी बेजान हैं।

आज सब कुछ हें मेरे पास, पर आप नही हो तो लगता हैं,

जैसे सब कुछ पाकर भी खाली हैं मेरे हाथ।

प्राजक्ता वि. गोल्हार
सहा. प्रबंधक (विपणन)



***

सोमनाथ मंदिर का इतिहास



भारत के 12 ज्योतिर्लिंगों में सर्वप्रथम ज्योतिर्लिंग के रूप में सोमनाथ ज्योतिर्लिंग को जाना जाता है। यह मंदिर गर्भगृह, सभामंडप और नृत्यमंडप- तीन प्रमुख भागों में विभाजित है। इसका 150 फुट ऊंचा शिखर है। इसके शिखर पर स्थित कलश का भार दस टन है और इसकी ध्वजा 27 फुट ऊंची है।

यहाँ तीन नदियों हिरण, कपिला और सरस्वती का महासंगम होता है। इस त्रिवेणी स्नान का विशेष महत्त्व है।

किंवदन्तियाँ:-प्राचीन हिन्दू ग्रन्थों के अनुसार में बताये कथानक के अनुसार सोम अर्थात् चन्द्र ने दक्षप्रजापति राजा की 27 कन्याओं से विवाह किया था। उन सभी पुत्रियों में चन्द्र देव को रोहिणी से अत्यधिक लगाव था। इस बात से बाकि कन्याएं उनसे नाराज हुई और यह बात अपने पिता दक्ष प्रजापति को बताई, इससे प्रजापति नाराज हो गए। उन्होंने चन्द्र देव को जोर देकर कहा कि वह अपने प्यार में निष्पक्ष रहें। जब चंद्र ने उनकी चेतावनियों पर ध्यान नहीं दिया, तो प्रजापति ने उन्हें शाप दिया कि अब से हर दिन तुम्हारा तेज (काँति, चमक) क्षीण होता रहेगा। फलस्वरूप हर दूसरे दिन चन्द्र का तेज घटने लगा। शाप से विचलित और दु:खी सोम ने भगवान शिव की आराधना शुरू कर दी। अन्ततः शिव प्रसन्न हुए और चन्द्रदेव के शाप का निवारण किया। सोम के कष्ट को दूर करने वाले प्रभु शिव का स्थापन यहाँ करवाकर उनका नामकरण हुआ "सोमनाथ"।

ऐसी भी मान्यता है कि श्रीकृष्ण भालका तीर्थ पर विश्राम कर रहे थे। तब ही शिकारी ने उनके पैर के तलुए में पद्मचिह्न को हिरण की आँख जानकर अनजाने में तीर मारा था। तब ही कृष्ण ने देह त्यागकर यहीं से वैकुण्ठ गमन किया। इस स्थान पर बड़ा ही सुन्दर कृष्ण मन्दिर बना हुआ है।

सोमनाथ मंदिर पर आक्रमण एवं पुनर्निर्माण :-

649 ई.वी. में वैल्लभी के यादव राजाओं द्वारा इसका निर्माण करवाया था। 725 ई.वी. में अलजुनैद नाम के सुबेदार ने पहली बार इसपर हमला करके मंदिर को खंडित कर दिया था और फिर धार्मिक आस्था के चलते राजा नागभट्ट ने 815 ई.वी. में इस प्राचीन शिव मंदिर को दुबारा बनवा दिया था।

यात्री अल-बरुनी ने अपने यात्रा वृतान्त में इसका विवरण लिखा जिससे प्रभावित हो महमूद ग़ज़नवी ने सन 1024 में कुछ 5000 साथियों के साथ सोमनाथ मन्दिर पर हमला किया, उसकी सम्पत्ति लूटी और उसे नष्ट कर दिया। 50,000 लोग मन्दिर के अन्दर हाथ जोड़कर पूजा अर्चना कर रहे थे, प्रायः सभी कत्ल कर दिये गये।

इसके बाद गुजरात के राजा भीमदेव सोलंकी और मालवा के राजा भोज ने इसका पुनर्निर्माण करवाया। सन 1297 में जब दिल्ली सल्तनत ने गुजरात पर क़ब्ज़ा किया तो इसे पाँचवीं बार गिराया गया। मुगल बादशाह औरंगजेब ने इसे पुनः 1706 में गिरा दिया। इतिहासकारों की मानें तो इस मंदिर को 17 बार नष्ट किया गया और हर बार इसका पुनर्निर्माण किया गया। 1783 में अहिल्याबाई होलकर ने पुणे के पेशवा के साथ मिलकर ध्वस्त मंदिर के पास अलग मंदिर का निर्माण करवाया।



बाणस्तम्भ:- मन्दिर के दक्षिण में समुद्र के किनारे एक स्तम्भ है उसके ऊपर एक तीर रखकर संकेत किया गया है कि सोमनाथ मन्दिर और दक्षिण ध्रुव के बीच में पृथ्वी का कोई भूभाग नहीं है (आसमुद्रान्त दक्षिण ध्रुव पर्यंत अबाधित ज्योतिर्मार्ग)। इस स्तम्भ को 'बाणस्तम्भ' कहते हैं।



सोमनाथ का शूरवीर वीर हमीरसिंह गोहिल:- सोमनाथ मंदिर के ठीक सामने एक भाला धारी घुड़सवार की प्रतिमा तिराहे पर विद्यमान है, जिस पर लिखा है कि यह हमीरसिंह गोहिल की मूर्ति है जो सोमनाथ मंदिर की रक्षा के लिए शहीद हुए थे। ऐसा कहा जाता है शरीर से सिर अलग होने के बावजूद वीर हमीरसिंह गोहिल अंतिम सांस तक लड़ते रहे।

इस समय जो मंदिर खड़ा है उसे भारत के भूतपूर्व गृह मंत्री सरदार वल्लभ भाई पटेल ने बनवाया तथा 11 मई 1951 को भारत के प्रथम राष्ट्रपति डॉ. राजेंद्र प्रसाद ने मंदिर में ज्योतिर्लिंग को स्थापित किया था। 1962 में यह मंदिर पूर्ण रूप से बनकर तैयार हो गया था। 01 दिसंबर 1995 को भारत के भूतपूर्व राष्ट्रपति शंकर दयाल शर्मा ने इसे राष्ट्र को समर्पित किया। विश्व प्रसिद्ध सोमनाथ मंदिर आदि अनंत है। इसका सर्वप्रथम निर्माण काल अज्ञात है। हर काल में इस मंदिर को बुरी ताकतों ने लूटा और शिवलिंग को खंडित किया गया।

इन सबके बावजूद, आज भी अपने भक्तों के लिए सोमनाथ मंदिर में विराजित शिवलिंग और यह मंदिर पूरे भव्यता के साथ इस दुनिया के सामने खड़ा है।

यह मंदिर उन सभी बुरी ताकतों के लिए एक मिसाल है, और सबसे बड़ा उदाहरण है, जो यह दर्शाता है कि आखिर कितना भी अंधेरा हो, जीत हमेशा उजाले की ही होती है, और चाहे कितनी भी बुराई हो जीत हमेशा सच्चाई की ही होती है।

अंकित कुर्मी
कनिष्ठ सहायक (सा.)

***

सपने.....।

नींद टूटी, सपने धुंदले हो गए,
जग कर हम फिर से खुद में खो गए।

क्या पता था झूँठ थे ये सपने सारे,
आस तो जागी मगर हम सो गए।

देखने होगे नए सपने मगर अब जागकर,
सपने धुंधले किन्तु अपने हो गए।

शुक्रिया ए नींद तेरा किस तरह अब मैं करूँ,
आस के कुछ बीज मन में बो गए।

अब समय की रेत फिसली जा रही,
किन्तु हम उम्मीद में अब खो गए।

राह के कांटे नुकीले हो गए,
सपने पर अपने जड़ीले हो गए।

रास्ता फूलों का हो यह आस किसकी,
नयन मंजिल के दीवाने हो गए।

नींद टूटी, सपने धुंदले हो गए,
जग कर हम फिर से खुद में खो गए।



अमित उपाध्याय
सहायक वाणिज्यिक कार्यकारी

***

जिंदगी का हौसला

जिंदगी में ना हमने किसी से हार मानी थी,
ठोकरें खाकर भी हमने उम्मीदें सभी संभाल रखी थी।

इक दिन आएगा अपना ये उम्मीदें पाल रखी थी,
कभी तो होगा यह सपना सच ये हमने जान रखी थी।

जिंदगी में ना हमने किसी से हार मानी थी,
फिर भी हम ना हार मानेंगे ये मन में ठान राखी थी।

कभी एक दिन तो ये कश्ती किनारे पर भी आएगी,
ये सोचकर लहरों पे चापु की मार जारी थी।

जिंदगी में ना हमने किसी से हार मानी थी,
हमने भी मेहनत का वो पौधा दिल में लगाया था।

इसी उम्मीद से हमने उसे पसीने से सींचा था,
इक दिन यह पौधा हमारा दामन फूलों से भर जाएगा।

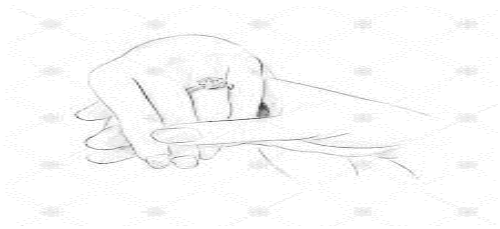
यही सब सोच कर पौधे को संभाला था,
जिंदगी में ना हमने किसी से हार मानी,
ठोकरें खाकर भी हमने उम्मीदें सभी संभाली।

महेश लाटा
पुत्र श्री इंद्रप्रकाश लाटा
वरिष्ठ सहायक (सा)

***

"जीवन-साथी"

मेरी ज़िंदगी की खुशियां तेरे आने से है,
आधी तुझे सताने से है आधी तुझे मनाने से है।
भले ही झगड़ें, गुस्सा करें,
एक दूसरे पर टूट पड़ें।
एक दूसरे का खयाल रखने के लिए,
अन्त में हम दोनों ही होंगे।
जो कहना है वह कह लें,
जो करना है वह कर लें।
एक दूसरे के चश्मे और लाठी ढूंढने में,
अन्त में हम दोनों ही होंगे।
मैं रूठूँ तो तुम मना लेना,
तुम रूठो तो मैं मना लूँगा।
एक दूसरे को लाड लड़ाने के लिए,
अन्त में हम दोनों ही होंगे।
आँखें जब धुँधली होंगी,
यादाश्त जब कमजोर होगी,
तब, एक दूसरे को एक दूसरे में ढूँढने के लिए,
अन्त में हम दोनों ही होंगे।
घुटने जब दुखने लगेंगे,
कमर भी झुकना बन्द करेगी,
तब एक दूसरे के पाँव के नाखून काटने के लिए,
अन्त में हम दोनों ही होंगे।
अरे मुझे कुछ नहीं हुआ बिल्कुल ठीक हूँ,
ऐसा कह कर एक दूसरे को बहकाने के लिए,
अन्त में हम दोनों ही होंगे।
साथ जब छूट जायेगा,
विदाई की घड़ी जब आ जाएगी,
तब एक दूसरे को माफ़ करने के लिए,
अन्त में हम दोनों ही होंगे।



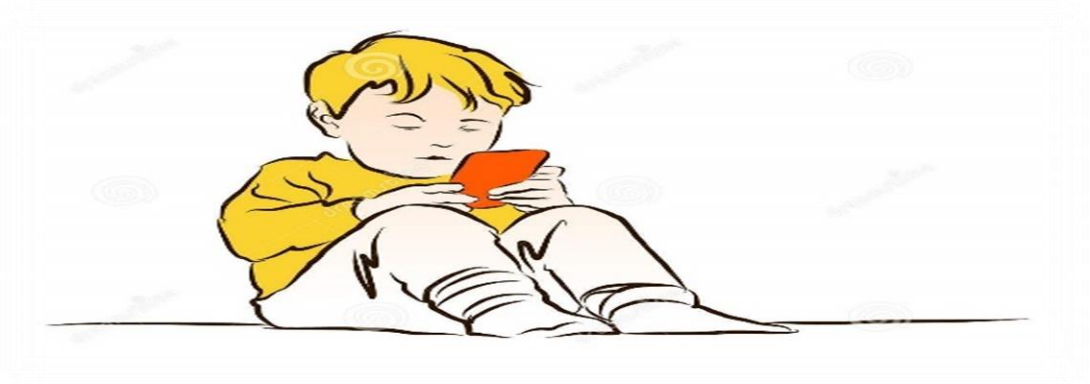
विकास कुमार मेघवंशी
कनिष्ठ सहायक (सा)

***

बच्चों में बढ़ता मोबाईल फोन का चलन.....।

आज के आधुनिक युग में भ्रमणध्वनि (मोबाईल) काफी जरूरतमंद साधन बन गया है। लगभग सभी काम जो कि संगणक की सहायता से किये जा सकते है, वही काम मोबाईल से भी करना संभव हो गया है। कोविड-19 के आपातकालीन समय में शिक्षा के क्षेत्र में मोबाईल द्वारा स्कूलों के विद्यार्थी को शिक्षा प्रदान करने जैसा महत्वपूर्ण काम मोबाईल के माध्यम से किया गया। शिक्षा के इस माध्यम से बच्चों में मोबाईल के प्रति आकर्षण बढ़ गया है जिसका उनके जीवन पर बुरा असर पड़ रहा है। ऐसा पाया जा रहा है कि बच्चे अधिक से अधिक समय मोबाईल पर खेल खेलने में बिताते है। वे उसमें इतना तल्लीन हो जाते है कि उन्हे बाकी चीजों में रुचि नहीं रहती है। आंतरजाल की दुनिया में विविध प्रकार के ऑनलाइन खेल, ऐप्स में बच्चे मशगूल हो जाते है। इसका फलस्वरूप उनमें मोबाईल के प्रति बढ़ता आकर्षण उनके शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य पर बुरा असर डाल रहा है। जब मोबाईल लोगों में ज्यादा परिचित नहीं था या फिर चुनिंदा लोग उसका उपयोग करते थे तब सभी लोग एक-दूसरों से बातों में, खेलों में अपना खाली समय बिताते थे। इससे वे एक-दूसरों से जुड़े रहते थे। लेकिन मोबाईल के बढ़ते उपयोग ने परिस्थिति अब इसके विपरीत हो गई है। कुछ दिन पहले महाराष्ट्र के यवतमाल जिले के बंसी नामक गाँव ने ग्रामसभा में एक प्रस्ताव को सम्मति दी जिसमे पंचायत ने अठराह साल से कम उम्र के बच्चों के मोबाइल फोन इस्तेमाल पर प्रतिबंध लगा दिया है। इसका उल्लंघन करने पर बच्चों के माता-पिता पर 200 रुपये का जुर्माना लगाया जाएगा। इसका उद्देश्य बच्चों को पढ़ाई की ओर वापस लाना है न कि मोबाइल फोन से विचलित होना। इसके अलावा महाराष्ट्र के ही सांगली जिले के मोहितांचे वडगांव नामक गाँव ने निवासियों के मोबाईल फोन की लत से निपटने के लिए इवनिंग डीटोक्स का विकल्प चुना था एवं इस वर्ष स्वतंत्रता दिवस पर लिये गए निर्णय के अनुसार बच्चों और वयस्कों को हर दिन शाम 7 बजे से 8.30 बजे के बीच मोबाइल फोन का उपयोग करने से रोक दिया गया था।

इन सभी प्रयासों का उद्देश्य एक ही है कि बच्चों को मोबाइल फोन के इस्तेमाल की लत से दूर रखकर उन्हे पढ़ाई और मैदानी खेलों के लिए प्रेरित किया जा सकें जिससे वे अपना बौद्धिक एवं शारीरिक विकास कर पायें।



आकाश सुरडकर
कनिष्ठ सहायक (लेखा)

***

कपास का गर्वगान

मैं बीजा जाता हूँ किसान की अभिलाषा से,
खेतों में लहराता हूँ मिट्टी की भाषा से,
श्वेत स्वर्ण मै कहलाता, मन किसान का हूँ बहलाता।

मंत्रीजी भी मुझे पहन, देख कैसे आप है इतराते,
श्वेत स्वर्ण ही लोगों को उसका व्यक्तित्व है बताता।

भारत माँ का मान है मुझसे,
तिरंगे की शान है मुझसे।

नभ भी तपती गर्मी में मुझ सफ़ेद सा हो जाता है,
धरती भी जब ठंडी पड़ती श्वेत बर्फ से ढक जाती है।

श्वेत स्वर्ण को बेच किसान गरीबी को सुलझाता है,
श्वेत स्वर्ण की चमक से ही अमीर चमक दिखलाता है।



शैलेंद्र कुमार पाटीदार
सहायक वाणिज्यिक कार्यकारी

***

समय की धारा

ना मुझे कोई देख पाए, ना मुझे कोई सुन पाए,
फिर भी में सब की खबर रखता हूँ,
जो मुझे ना समझ पाये उसका विनाश करता हूँ।

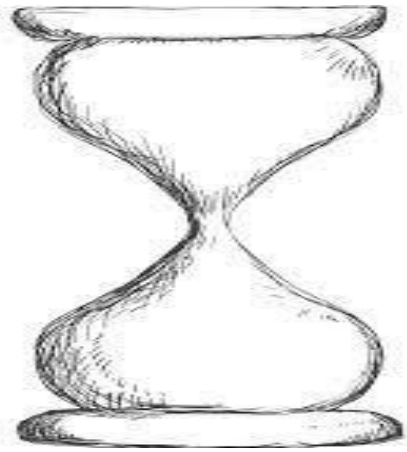
एक बार मेरी धारा में छूट जाऊ, फिर कभी न वापस आऊ,
जिस ने मुझे समझा और बचाया, मैं सदा उसके उपयोग में आया।

जो न जान पाया मेरी कीमत, उसका ना करे कोई मोल,
जो न मुझे व्यर्थ गवाए, जो चाहे उसे सब मिल जाएँ।

ना रुकता मै किसी के लिए, न झुकता मै किसी के लिए,
पर जो झुका मेरे सामने, उसने हमेशा उसका मान बढ़ाया।

क्यों व्यर्थ इंतज़ार करते हो तुम, ये पल फिर ना आएगा,
मै अगर बीत गया तो, तू कही का ना रह जाएगा।

मै समय हूँ, समय हूँ, समय हूँ और सिर्फ समय हूँ .....



संजय राठी
वरिष्ठ सहायक (सा.)

***

"युवा"

कौन सलामत है अब यहां, हर युवा भीतर से टूटा हुआ है,

कोई हंसी भूल गया, कोई रोना भूल गया, किसी ने अकेले रहना चुन लिया,
तो कोई भीड़ में भी गुमसुम बैठा हुआ है।

किसी की शिकायतें खत्म हो गई, तो कोई प्यार से किनारा कर बैठा,
सब कहीं न कहीं हारे हुए हैं, अपनी ही कहानी में...!!!

संघर्ष और जीवन का बोझिल ये कारवां,
रुकता गया बढता गया।

सूरज का उगना सूरज का ढलना चलता रहा,
संघर्ष की राहों मे वो मस्त मौला चलता रहा।

जीवन का दुख और सुख बस यही चलता रहा,
कौन सलामत है यहाँ, हर कोई टूटता गया।

शिवम डी. भारती
अस्थायी क्लर्क



***

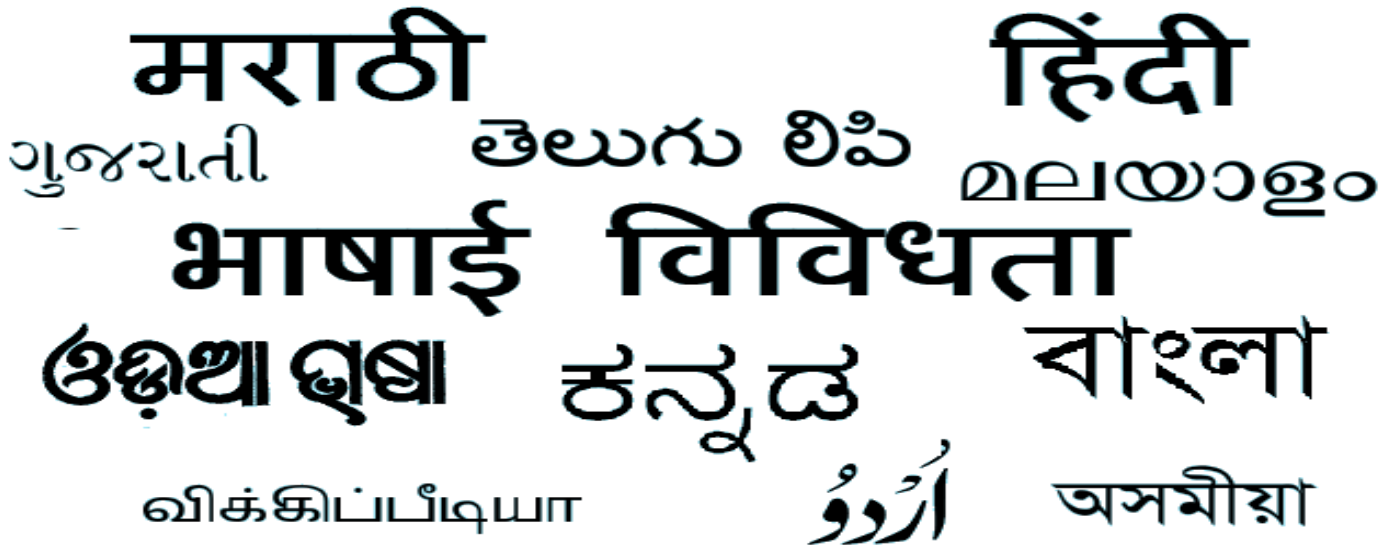
भाषा की विविधता

सांस्कृतिक व भाषाई विविधता से भरे भारत देश में - पूरब से पश्चिम और उत्तर से दक्षिण के बीच, सदियों से कई भाषाओं ने संपर्क बनाए रखने का काम किया है। हिंदी इसमें सबसे प्रमुख भाषाओं में से एक रही है और हिंदी भाषा के योगदान को समय-समय पर सराहा भी गया है। इसके अलावा हिंदी ने भारत को एकता के सूत्र में पिरोने का काम किया है। हिंदी भारत के स्वतंत्रता संग्राम के समय से राष्ट्रीय एकता और अस्मिता का प्रभावी व शक्तिशाली माध्यम रही है। हिंदी की सबसे बड़ी शक्ति इसकी वैज्ञानिकता, मौलिकता, सरलता, सुबोधता और स्वीकार्यता भी है। हिंदी को जन-जन की भाषा भी कहा गया है।

"भारतीय भाषाओं में केवल हिंदी ही एक ऐसी भाषा है जिसे राष्ट्रभाषा के रूप में अपनाया जा सकता है क्योंकि यह अधिकांश भारतीयों द्वारा बोली जाती है। यह समस्त भारत में आर्थिक, धार्मिक और राजनीतिक सम्पर्क माध्यम के रूप में प्रयोग के लिए सक्षम है तथा इसे सारे देश के लिए सीखना आवश्यक है।"

हिंदी हमारी आन है हिंदी हमारी शान है,
हिंदी हमारी चेतना वाणी का शुभ वरदान है।

जयदीप चौहान
कनिष्ठ सहायक (सा)



***

माँ

खाना खाले बेटा, खाना खाले बेटा,
तू कह कर बहुत सताती थी।
अब तुझसे बहुत दूर हूँ मेरी माँ,
तेरी हाथों की बनी हुई रोटी बहुत याद आती।
जब भी मै घर देर से आता था,
तू ज़ोर से डांट लगाती थी।
आज मै घर आऊ या न आऊ,
तब तेरी याद बहुत सताती है।

मेरी गलती छुपाने के लिए,
दूसरो से लड़ जाती थी।
आज मै इतना कमजोर हूँ,
माँ तेरी हर बात याद आती है।
चाह कर भी मुझसे गलती न हो,
तू ऐसी शिक्षा देती थी ।

मेरी छोटी-सी चोट पर भी,
आँख तेरी भर आती।
आज हर हाथ में पत्थर है माँ,
काश ! तू मेरे लिये हिमालय बन जाती।

एन. आर. सोलंकी
वरि.सहायक (लेखा)



***

"राजभाषा की व्यथा"

उपेक्षित हूँ मैं राजभाषा के पद पर स्थापित होते हुए भी,

याद कर ली जाती हूँ आंग्ल संस्कृति में डूबे हुए सरकारी विभागों में,

एक सप्ताह या पखवाड़ा के रूप में।

'हिंदी हैं हम वतन है हिन्दोस्तां हमारा' के नारों से गर्वान्वित होती हूँ,

विचरण करना चाहती हूँ कश्मीर से कन्याकुमारी तक,

उठना चाहती हूँ संवैधानिक दर्जे से ऊपर,

राजभाषा की सीमा से परे, राष्ट्रभाषा तक।

पिरोना चाहती हूँ सवा सौ करोड़ मानकों को एक राष्ट्रसूत्र में,

मैं हिंदी हूँ और हिंदुस्तान की आत्मा भी।

ज्योति त्रिवेदी

कनिष्ठ सहायक (सा)



***

समर्पण

सूखी सी अधखिली कली है
परिमल नहीं, पराग नहीं।
किंतु कुटिल भौंरों के चुंबन
का है इन पर दाग नहीं।

तेरी अतुल कृपा का बदला
नहीं चुकाने आई हूँ।
केवल पूजा में ये कलियाँ
भक्ति-भाव से लाई हूँ।

प्रणय-जल्पना चिन्त्य-कल्पना
मधुर वासनाएं प्यारी।
मृदु-अभिलाषा, विजई आशा
सजा रहीं थीं फुलवारी।

किंतु गर्व का झोंका आया
यदपि गर्व वह था तेरा।
उजड़ गई फुलवारी सारी
बिगड़ गया सब कुछ मेरा।

बची हुई स्मृति की ये कलियाँ
मैं समेट कर लाई हूँ।
तुझे सुझाने, तुझे रिझाने
तुझे मनाने आई हूँ।

प्रेम-भाव से हो अथवा हो
दया-भाव से ही स्वीकार।
ठुकराना मत, इसे जानकर
मेरा छोटा सा उपहार।

कवियत्री सुभद्रा कुमारी चौहान

***

अमावस्या की रात्रि

दीवाली की संध्या थी। श्रीनगर के घूरों और खँडहरों के भी भाग्य चमक उठे थे। कस्बे के लड़के और लड़कियाँ श्वेत थालियों में दीपक लिये मंदिर की ओर जा रही थीं। दीपों से उनके मुखारविंद प्रकाशमान थे। प्रत्येक गृह रोशनी से जगमगा रहा था। केवल पंडित देवदत्त का सतधारा भवन काली घटा के अंधकार में गंभीर और भयंकर रूप में खड़ा था। गंभीर इसलिए कि उसे अपनी उन्नति के दिन भूले न थे और भयंकर इसलिए कि यह जगमगाहट मानो उसे चिढ़ा रही थी। एक समय वह था जबकि ईर्ष्या भी उसे देख-देखकर हाथ मलती थी और एक समय यह है जबकि घृणा भी उस पर कटाक्ष करती है। द्वार पर द्वारपाल की जगह अब मदार और एरंड के वृक्ष खड़े थे। दीवानखाने में एक मतंग साँड़ अकड़ता था। ऊपर के घरों में जहाँ सुन्दर रमणियाँ मनोहर संगीत गाती थीं वहाँ आज जंगली कबूतरों के मधुर स्वर सुनायी देते थे। किसी अँग्रेजी मदरसे के विद्यार्थी के आचरण की भाँति उसकी जड़ें हिल गयी थीं और उसकी दीवारें किसी विधवा स्त्री के हृदय की भाँति विदीर्ण हो रही थीं पर समय को हम कुछ नहीं कह सकते। समय की निंदा व्यर्थ और भूल है यह मूर्खता और अदूरदर्शिता का फल था। अमावस्या की रात्रि थी। प्रकाश से पराजित हो कर मानो अंधकार ने उसी विशाल भवन में शरण ली थी। पंडित देवदत्त अपने अर्द्ध अंधकारवाले कमरे में मौन परंतु चिंता में निमग्न थे। आज एक महीने से उनकी पत्नी गिरिजा की जिंदगी को निर्दय काल ने खिलवाड़ बना लिया है। पंडित जी दरिद्रता और दुःख को भुगतने के लिए तैयार थे। भाग्य का भरोसा उन्हें धैर्य बँधाता था किंतु यह नयी विपत्ति सहन-शक्ति से बाहर थी। बेचारे दिन के दिन गिरिजा के सिरहाने बैठे हुए उसके मुरझाये हुए मुख को देख कर कुढ़ते और रोते थे। गिरिजा जब अपने जीवन से निराश हो कर रोती तो वह उसे समझाते- गिरिजा रोओ मत शीघ्र ही अच्छी हो जाओगी। पंडित देवदत्त के पूर्वजों का कारोबार बहुत विस्तृत था। वे लेन-देन किया करते थे। अधिकतर उनके व्यवहार बड़े-बड़े चकलेदारों और रजवाड़ों के साथ थे। उस समय ईमान इतना सस्ता नहीं बिकता था। सादे पत्रों पर लाखों की बातें हो जाती थीं। मगर सन् 57 ईस्वी के बलवे ने कितनी ही रियासतों और राज्यों को मिटा दिया और उनके साथ तिवारियों का यह अन्न-धन-पूर्ण परिवार भी मिट्टी में मिल गया। खजाना लुट गया बही-खाते पंसारियों के काम आये। जब कुछ शांति हुई रियासतें फिर सँभलीं तो समय पलट चुका था। वचन लेख के अधीन हो रहा था तथा लेख में भी सादे और रंगीन का भेद होने लगा था। जब देवदत्त ने होश सँभाला तब उनके पास इस खँडहर के अतिरिक्त और कोई सम्पत्ति न थी। अब निर्वाह के लिए कोई उपाय न था। कृषि में परिश्रम और कष्ट था। वाणिज्य के लिए धन और बुद्धि की आवश्यकता थी। विद्या भी ऐसी नहीं थी कि कहीं नौकरी करते परिवार की प्रतिष्ठा दान लेने में बाधक थी। अस्तु साल में दो-तीन बार अपने पुराने व्यवहारियों के घर बिना बुलाये पाहुनों की भाँति जाते और कुछ विदाई तथा मार्ग-व्यय पाते उसी पर गुजारा करते। पैतृक प्रतिष्ठा का चिह्न यदि कुछ शेष था तो वह पुरानी चिट्ठी-पत्रियों का ढेर तथा हुंडियों का पुलिंदा जिनकी स्याही भी उनके मंद भाग्य की भाँति फीकी पड़ गयी थी। पंडित देवदत्त उन्हें प्राणों से भी अधिक प्रिय समझते। द्वितीया के दिन जब घर-घर लक्ष्मी की पूजा होती है पंडित जी ठाट-बाट से इन पुलिंदों की पूजा करते। लक्ष्मी न सही लक्ष्मी का स्मारक-चिह्न ही सही। दूज का दिन पंडित जी के प्रतिष्ठा के श्रद्धा का दिन था। इसे चाहे विडंबना कहो चाहे मूर्खता परंतु श्रीमान् पंडित महाशय को उन पत्रों पर बड़ा अभिमान था। जब गाँव में कोई विवाद छिड़ जाता तो यह सड़े-गले कागजों की सेना ही बहुत काम कर जाती और प्रतिवादी शत्रु को हार माननी पड़ती। यदि सत्तर पीढ़ियों से शस्त्र की सूरत न देखने पर भी

लोग क्षत्रिय होने का अभिमान करते हैं तो पंडित देवदत्त का उन लेखों पर अभिमान करना अनुचित नहीं कहा जा सकता जिसमें सत्तर लाख रुपयों की रकम छिपी हुई थी।

वही अमावस्या की रात्रि थी। किंतु दीपमालिका अपनी अल्प जीवनी समाप्त कर चुकी थी। चारों ओर जुआरियों के लिए यह शकुन की रात्रि थी क्योंकि आज की हार साल भर की हार होती है। लक्ष्मी के आगमन की धूम थी। कौड़ियों पर अशर्फियाँ लुट रही थीं। भट्ठियों में शराब के बदले पानी बिक रहा था। पंडित देवदत्त के अतिरिक्त कस्बे में कोई ऐसा मनुष्य नहीं था जो कि दूसरों की कमाई समेटने की धुन में न हो। आज भोर से ही गिरिजा की अवस्था शोचनीय थी। विषम ज्वर उसे एक-एक क्षण में मूर्च्छित कर रहा था। एकाएक उसने चौंक कर आँखें खोलीं और अत्यंत क्षीण स्वर में कहा-आज तो दीवाली है। देवदत्त ऐसा निराश हो रहा था कि गिरिजा को चैतन्य देख कर भी उसे आनंद नहीं हुआ। बोला-हाँ आज दीवाली है। गिरिजा ने आँसू-भरी दृष्टि से इधर-उधर देख कर कहा-हमारे घर में क्या दीपक न जलेंगे देवदत्त फूट-फूट कर रोने लगा। गिरिजा ने फिर उसी स्वर में कहा-देखो आज बरस-भर के दिन भी घर अँधेरा रह गया। मुझे उठा दो मैं भी अपने घर दिये जलाऊँगी। ये बातें देवदत्त के हृदय में चुभी जाती थीं। मनुष्य की अंतिम घड़ी लालसाओं और भावनाओं में व्यतीत होती है। इस नगर में लाला शंकरदास अच्छे प्रसिद्ध वैद्य थे। अपने प्राणसंजीवन औषधालय में दवाओं के स्थान पर छापने का प्रेस रखे हुए थे। दवाइयाँ कम बनती थीं इश्तहार अधिक प्रकाशित होते थे। वे कहा करते थे कि बीमारी केवल रईसों का ढकोसला है और पोलिटिकल एकानोमी के (राजनीतिक अर्थशास्त्र के) अनुसार इस विलास-पदार्थ से जितना अधिक सम्भव हो टैक्स लेना चाहिए। यदि कोई निर्धन है तो हो। यदि कोई मरता है तो मरे। उसे क्या अधिकार है कि बीमार पड़े और मुफ्त में दवा कराये भारतवर्ष की यह दशा अधिकतर मुफ्त दवा कराने से हुई है। इसने मनुष्यों को असावधान और बलहीन बना दिया है। देवदत्त महीने भर नित्य उनके निकट दवा लेने आता था परंतु वैद्य जी कभी उसकी ओर इतना ध्यान नहीं देते थे कि वह अपनी शोचनीय दशा प्रकट कर सके। वैद्य जी के हृदय के कोमल भाग तक पहुँचने के लिए देवदत्त ने बहुत कुछ हाथ-पैर चलाये। वह आँखों में आँसू भरे आता किन्तु वैद्य जी का हृदय ठोस था उसमें कोमल भाव था ही नहीं। वही अमावस्या की डरावनी रात थी। गगन-मंडल में तारे आधी रात के बीतने पर और भी अधिक प्रकाशित हो रहे थे मानो श्रीनगर की बुझी हुई दीवाली पर कटाक्षयुक्त आनंद के साथ मुस्करा रहे थे। देवदत्त बेचैनी की दशा में गिरिजा के सिरहाने से उठे और वैद्य जी के मकान की ओर चले। वे जानते थे कि लाला जी बिना फीस लिये कदापि नहीं आयेंगे किंतु हताश होने पर भी आशा पीछा नहीं छोड़ती। देवदत्त कदम आगे बढ़ाते चले जाते थे।

हकीम जी उस समय अपने रामबाण बिंदु का विज्ञापन लिखने में व्यस्त थे। उस विज्ञापन की भावप्रद भाषा तथा आकर्षण-शक्ति देख कर कह नहीं सकते कि वे वैद्य-शिरोमणि थे या सुलेखक विद्यावारिधि। पाठक आप उनके उर्दू विज्ञापन का साक्षात् दर्शन कर लें-नाजरीन आप जानते हैं कि मैं कौन हूँ आपका जर्द चेहरा आपका तने लागिर आपका जरा-सी मेहनत में बेदम हो जाना आपका लज्जात दुनिया में महरूम रहना आपका खाना तरीकी यह सब इस सवाल का नफी में जवाब देते हैं। सुनिए मैं कौन हूँ मैं वह शख्स हूँ जिसने इमराज इन्सानी को पर्दे दुनिया से गायब कर देने का बीड़ा उठाया है जिसने इश्तिहारबाज जा फरोश गंदुमनुमा बने हुए हकीमों को बेखबर व बुन से खोद कर दुनिया को पाक कर देने का अज्म विल् जज्म कर लिया है। मैं वह हैरतअंगेज इनसान जईफ-उल- बयान हूँ जो नाशाद को दिलशाद नामुराद को बामुराद भगोड़े को दिलेर गीदड़ को शेर बनाता है। और यह किसी जादू से नहीं मंत्र से नहीं वह मेरी ईजाद करदा अमृतबिंदु के अदना करिश्मे हैं। अमृतबिंदु क्या है इसे कुछ मैं ही जानता हूँ। महर्षि अगस्त ने धन्वन्तरि के कानों में इसका नुस्खा बतलाया था।

जिस वक्त आप वी. पी. पार्सल खोलेंगे आप पर उसकी हकीकत रौशन हो जायगी। यह आबेहयात है। यह मर्दानगी का जौहर फरजानगी का अक्सीर अक्ल का मुरब्बा और जेहन का सकील है। अगर वर्षों की मुशायराबाजी ने भी आपको शायर नहीं बनाया अगर शबे रोज के रटंत पर भी आप इम्तहान में कामयाब नहीं हो सके अगर दल्लालों की खुशामद और मुवक्किलों की नाजबर्दारी के बावजूद भी आप अहाते-अदालत में भूखे कुत्ते की तरह चक्कर लगाते फिरते हैं अगर आप गला फाड़-फाड़ चीखने मेज पर हाथ-पैर पटकने पर भी अपनी तकरीर से कोई असर पैदा नहीं कर सकते तो आप अमृतबिंदु का इस्तेमाल कीजिए। इसका सबसे बड़ा फायदा जो पहले ही दिन मालूम हो जायगा यह है कि आपकी आँखें खुल जायँगी और आप फिर कभी इश्तहारबाज हकीमों के दाम फरेब में न फँसेंगे। वैद्य जी इस विज्ञापन को समाप्त कर उच्च स्वर से पढ़ रहे थे उनके नेत्रों में उचित अभिमान और आशा झलक रही थी कि इतने में देवदत्त ने बाहर से आवाज दी। वैद्य जी बहुत खुश हुए। रात के समय उनकी फीस दुगुनी थी। लालटेन लिये बाहर निकले तो देवदत्त रोता हुआ उनके पैरों से लिपट गया और बोला-वैद्य जी इस समय मुझ पर दया कीजिए। गिरिजा अब कोई सायत की पाहुनी है। अब आप ही उसे बचा सकते हैं। यों तो मेरे भाग्य में जो लिखा है वही होगा किंतु इस समय तनिक चल कर आप देख लें तो मेरे दिल का दाह मिट जायगा। मुझे धैर्य हो जायगा कि उसके लिए मुझसे जो कुछ हो सकता था मैंने किया। परमात्मा जानता है कि मैं इस योग्य नहीं हूँ कि आपकी कुछ सेवा कर सकूँ किंतु जब तक जीऊँगा आपका यश गाऊँगा और आपके इशारों का गुलाम बना रहूँगा ! हकीम जी को पहले कुछ तरस आया किंतु वह जुगुनू की चमक थी जो शीघ्र स्वार्थ के विशाल अंधकार में विलीन हो गयी।

वही अमावस्या की रात्रि थी। वृक्षों पर सन्नाटा छा गया था। जीतनेवाले अपने बच्चों को नींद से जगा कर इनाम देते थे। हारनेवाले अपनी रुष्ट और क्रोधित स्त्रियों से क्षमा के लिए प्रार्थना कर रहे थे। इतने में घंटी के लगातार शब्द वायु और अंधकार को चीरते हुए कान में आने लगे। उनकी सुहावनी ध्वनि इस निस्तब्ध अवस्था में अत्यंत भली प्रतीत होती थी। यह शब्द समीप हो गये और अंत में पंडित देवदत्त के समीप आ कर उस खँडहर में डूब गये। पंडित जी उस समय निराशा के अथाह समुद्र में गोते खा रहे थे। शोक में इस योग्य भी नहीं थे कि प्राणों से भी अधिक प्यारी गिरिजा का दवा-दरपन कर सकें। क्या करें इस निष्ठुर वैद्य को यहाँ कैसे लायें जालिम मैं सारी उमर तेरी गुलामी करता। तेरे इश्तिहार छापता। तेरी दवाइयाँ कूटता। आज पंडित जी को यह ज्ञात हुआ है कि सत्तर लाख की चिट्ठी-पत्रियाँ इतनी कौड़ियों के मोल भी नहीं। पैतृक प्रतिष्ठा का अहंकार अब आँखों से दूर हो गया। उन्होंने उस मखमली थैले को संदूक से बाहर निकाला और उन चिट्ठी-पत्रियों को जो बाप-दादों की कमाई का शेषांश थीं और प्रतिष्ठा की भाँति जिनकी रक्षा की जाती थी एक-एक करके दीया को अर्पण करने लगे। जिस तरह सुख और आनंद से पालित शरीर चिता की भेंट हो जाती है उसी प्रकार वह कागजी पुतलियाँ भी उस प्रज्वलित दीया के धधकते हुए मुँह का ग्रास बनती थीं। इतने में किसी ने बाहर से पंडित जी को पुकारा। उन्होंने चौंक कर सिर उठाया। वे नींद से अँधेरे में टटोलते हुए दरवाजे तक आये। देखा कि कई आदमी हाथ में मशाल लिये हुए खड़े हैं और एक हाथी अपने सूँड से उन एरंड के वृक्षों को उखाड़ रहा है जो द्वार पर द्वारपालों की भाँति खड़े थे। हाथी पर एक सुंदर युवक बैठा है जिसके सिर पर केसरिया रंग की रेशमी पाग है। माथे पर अर्धचंद्राकार चंदन भाले की तरह तनी हुई नोकदार मूँछें मुखारविंद से प्रभाव और प्रकाश टपकता हुआ कोई सरदार मालूम पड़ता था। उसका कलीदार अँगरखा और चुनावदार पैजामा कमर में लटकती हुई तलवार और गर्दन में सुनहरे कंठे और जंजीर उसके सजीले शरीर पर अत्यंत शोभा पा रहे थे। पंडित जी को देखते ही उसने रकाब पर पैर रखा और नीचे उतर कर उनकी वंदना की। उसके इस विनीत भाव से कुछ लज्जित हो कर पंडित जी बोले-आपका आगमन कहाँ से हुआ नवयुवक ने बड़े नम्र शब्दों में जवाब दिया। उसके चेहरे से

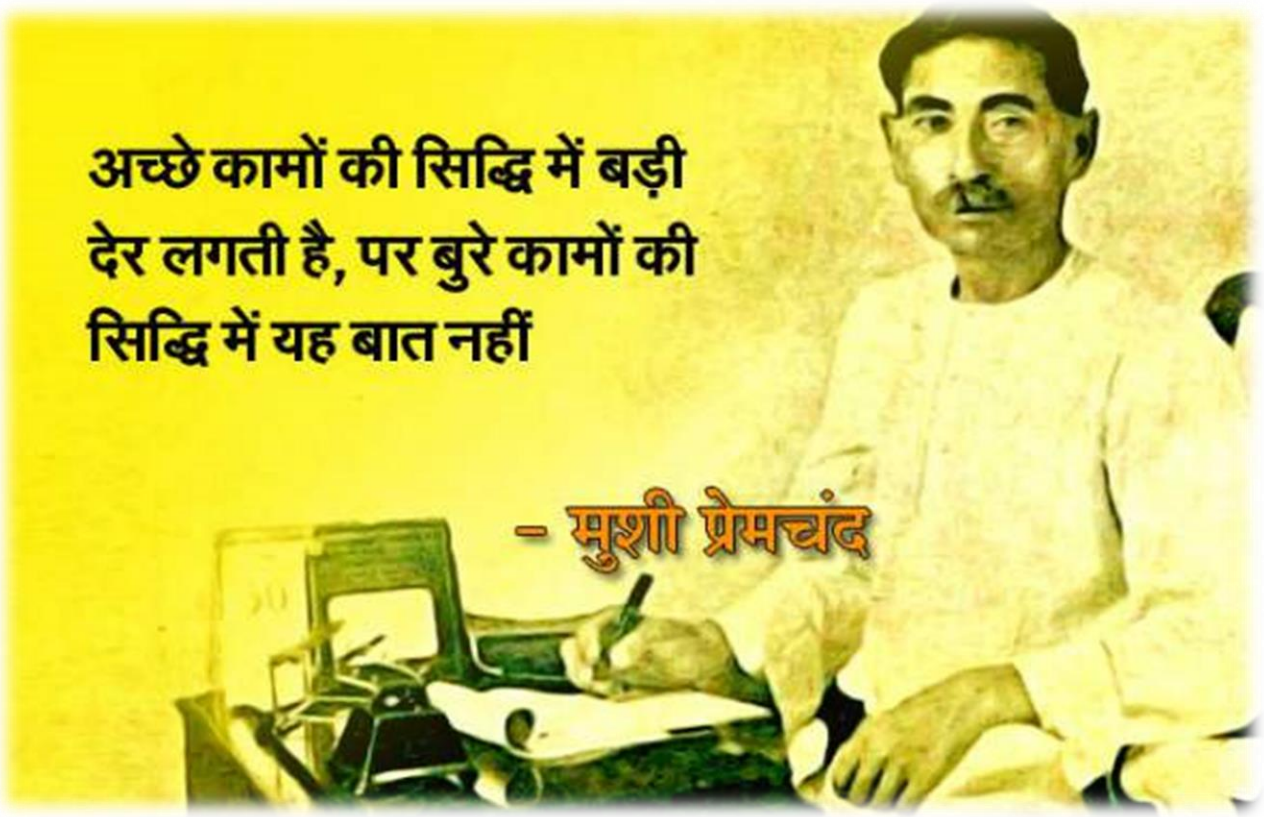
भलमनसाहत बरसती थी-मैं आपका पुराना सेवक हूँ। दास का घर राजनगर है। मैं वहाँ का जागीरदार हूँ। मेरे पूर्वजों पर आपके पूर्वजों ने बड़े अनुग्रह किये हैं। मेरी इस समय जो कुछ प्रतिष्ठा तथा सम्पदा है सब आपके पूर्वजों की कृपा और दया का परिणाम है। मैंने अपने अनेक स्वजनों से आपका नाम सुना था और मुझे बहुत दिनों से आपके दर्शनों की आकांक्षा थी। आज वह सुअवसर भी मिल गया। अब मेरा जन्म सफल हुआ। पंडित देवदत्त की आँखों में आँसू भर आये। पैतृक प्रतिष्ठा का अभिमान उनके हृदय का कोमल भाग था। वह दीनता जो उनके मुख पर छायी हुई थी थोड़ी देर के लिए विदा हो गयी। वे गम्भीर भाव धारण करके बोले-यह आपका अनुग्रह है जो ऐसा कहते हैं। नहीं तो मुझ जैसे कपूत में तो इतनी भी योग्यता नहीं है जो अपने को उन लोगों की संतति कह सकूँ। इतने में नौकरों ने आँगन में फर्श बिछा दिया। दोनों आदमी उस पर बैठे और बातें होने लगीं वे बातें जिनका प्रत्येक शब्द पंडित जी के मुख को इस तरह प्रफुल्लित कर रहा था जिस तरह प्रातःकाल की वायु फूलों को खिला देती है। पंडित जी के पितामह ने नवयुवक ठाकुर के पितामह को पच्चीस रुपये कर्ज दिये थे। ठाकुर अब गया में जा कर अपने पूर्वजों का श्राद्ध करना चाहता था इसलिए जरूरी था कि उसके जिम्मे जो कुछ ऋण हो उसकी एक-एक कौड़ी चुका दी जाय। ठाकुर को पुराने बहीखाते में यह ऋण दिखायी दिया। पच्चीस के अब पचहत्तर हजार हो चुके। वही ऋण चुका देने के लिए ठाकुर आया था। धर्म ही वह शक्ति है जो अंतःकरण में ओजस्वी विचारों को पैदा करती है। हाँ इस विचार को कार्य में लाने के लिए पवित्र और बलवान् आत्मा की आवश्यकता है। नहीं तो वे ही विचार क्रूर और पापमय हो जाते हैं। अंत में ठाकुर ने कहा-आपके पास तो वे चिट्ठियाँ होंगी देवदत्त का दिल बैठ गया। वे सँभल कर बोले-सम्भवतः हों। कुछ कह नहीं सकते। ठाकुर ने लापरवाही से कहा-ढूँढ़िए यदि मिल जायँ तो हम लेते जायँगे। पंडित देवदत्त उठे लेकिन हृदय ठंडा हो रहा था। शंका होने लगी कि कहीं भाग्य हरे बाग न दिखा रहा हो। कौन जाने वह पुर्जा जल कर राख हो गया या नहीं। यदि न मिला तो रुपये कौन देता है। शोक कि दूध का प्याला सामने आ कर हाथ से छूट जाता है ! -हे भगवान् ! वह पत्री मिल जाय। हमने अनेक कष्ट पाये हैं अब हम पर दया करो। इस प्रकार आशा और निराशा की दशा में देवदत्त भीतर गये और दीया के टिमटिमाते हुए प्रकाश में बचे हुए पत्रों को उलट-पुलट कर देखने लगे। वे उछल पड़े और उमंग में भरे हुए पागलों की भाँति आनंद की अवस्था में दो-तीन बार कूदे। तब दौड़ कर गिरिजा को गले से लगा लिया और बोले-प्यारी यदि ईश्वर ने चाहा तो तू अब बच जायगी। उन्मत्तता में उन्हें एकदम यह नहीं जान पड़ा कि गिरिजा अब नहीं है केवल उसकी लोथ है। देवदत्त ने पत्री को उठा लिया और द्वार तक वे इसी तेजी से आये मानो पाँवों में पर लग गये। परंतु यहाँ उन्होंने अपने को रोका और हृदय में आनंद की उमड़ती हुई तरंग को रोक कर कहा-यह लीजिए वह पत्री मिल गयी। संयोग की बात है नहीं तो सत्तर लाख के कागज दीमकों के आहार बन गये। आकस्मिक सफलता में कभी-कभी संदेह बाधा डालता है। जब ठाकुर ने उस पत्री को लेने को हाथ बढ़ाया तो देवदत्त को संदेह हुआ कि कहीं वह उसे फाड़ कर फेंक न दे। यद्यपि यह संदेह निरर्थक था किंतु मनुष्य कमजोरियों का पुतला है। ठाकुर ने उनके मन के भाव को ताड़ लिया। उसने बेपरवाही से पत्री को लिया और मशाल के प्रकाश में देख कर कहा-अब मुझे विश्वास हुआ। यह लीजिए आपका रुपया आपके समक्ष है आशीर्वाद दीजिए कि मेरे पूर्वजों की मुक्ति हो जाय। यह कह कर उसने अपनी कमर से एक थैला निकाला और उसमें से एक-एक हजार के पचहत्तर नोट निकाल कर देवदत्त को दे दिये। पंडित जी का हृदय बड़े वेग से धड़क रहा था। नाड़ी तीव्र-गति से कूद रही थी। उन्होंने चारों ओर चौकन्नी दृष्टि से देखा कि कहीं कोई दूसरा तो नहीं खड़ा है और तब काँपते हुए हाथों से नोटों को ले लिया। अपनी उच्चता प्रकट करने की व्यर्थ चेष्टा में उन्होंने नोटों की गणना भी नहीं की। केवल उड़ती हुई दृष्टि से देख कर उन्हें समेटा और जेब में डाल लिया। वही अमावस्या की रात्रि थी। स्वर्गीय दीपक भी

धुँधले हो चुके थे। उनकी यात्र सूर्यनारायण के आने की सूचना दे रही थी। उदयाचल फ़िरोजी बाना पहन चुका था। अस्ताचल में भी हलके श्वेत रंग की आभा दिखायी दे रही थी। पंडित देवदत्त ठाकुर को विदा करके घर चले। उस समय उनका हृदय उदारता के निर्मल प्रकाश से प्रकाशित हो रहा था। कोई प्रार्थी उस समय उनके घर से निराश नहीं जा सकता था। सत्यनारायण की कथा धूमधाम से सुनने का निश्चय हो चुका था। गिरिजा के लिए कपड़े और गहने के विचार ठीक हो गये। अंतःपुर में ही उन्होंने शालिग्राम के सम्मुख मनसा-वाचा-कर्मणा सिर झुकाया और तब शेष चिट्ठी-पत्रियों को समेट कर उसी मखमली थैले में रख दिया। किंतु अब उनका यह विचार नहीं था कि संभवतः उन मुर्दों में भी कोई जीवित हो उठे। वरन् जीविका से निश्चिंत हो अब वे पैतृक प्रतिष्ठा पर अभिमान कर सकते थे। उस समय वे धैर्य और उत्साह के नशे में मस्त थे। बस अब मुझे जिंदगी में अधिक सम्पदा की जरूरत नहीं। ईश्वर ने मुझे इतना दे दिया है। समें मेरी और गिरिजा की जिंदगी आनंद से कट जायगी। उन्हें क्या खबर थी कि गिरिजा की जिंदगी पहले कट चुकी है। उनके दिल में यह विचार गुदगुदा रहा था कि जिस समय गिरिजा इस आनंद-समाचार को सुनेगी उस समय अवश्य उठ बैठेगी। चिंता और कष्ट ने ही उसकी ऐसी दुर्गति बना दी है। जिसे भरपेट कभी रोटी नसीब न हुई जो कभी नैराश्यमय धैर्य और निर्धनता के हृदय-विदारक बंधन से मुक्त न हुई उसकी दशा इसके सिवा और हो ही क्या सकती है यह सोचते हुए वे गिरिजा के पास गये और आहिस्ता से हिला कर बोले-गिरिजा आँखें खोलो। देखो ईश्वर ने तुम्हारी विनती सुन ली और हमारे ऊपर दया की। कैसी तबीयत है किंतु जब गिरिजा तनिक भी न मिनकी तब उन्होंने चादर उठा दी और उसके मुँह की ओर देखा। हृदय से एक करुणात्मक ठंडी आह निकली। वे वहीं सिर थाम कर बैठ गये। आँखों से शोणित की बूँदें-सी टपक पड़ीं। आह क्या यह सम्पदा इतने महँगे मूल्य पर मिली है क्या परमात्मा के दरबार से मुझे इस प्यारी जान का मूल्य दिया गया है ईश्वर तुम खूब न्याय करते हो। मुझे गिरिजा की आवश्यकता है रुपयों की आवश्यकता नहीं। यह सौदा बड़ा महँगा है।

अमावस्या की अँधेरी रात गिरिजा के अंधकारमय जीवन की भाँति समाप्त हो चुकी थी। खेतों में हल चलाने वाले किसान ऊँचे और सुहावने स्वर से गा रहे थे। सर्दी से काँपते हुए बच्चे सूर्य देवता से बाहर निकलने की प्रार्थना कर रहे थे। पनघट पर गाँव की अलबेली स्त्रियाँ जमा हो गयी थीं। पानी भरने के लिए नहीं हँसने के लिए। कोई घड़े को कुएँ में डाले हुए अपनी पोपली सास की नकल कर रही थी कोई खम्भों से चिपटी हुई अपनी सहेली से मुस्करा कर प्रेमरहस्य की बातें करती थी। बूढ़ी स्त्रियाँ पोतों को गोद में लिये अपनी बहुओं को कोस रही थीं कि घंटे भर हुए अब तक कुएँ से नहीं लौटीं। किंतु राजवैद्य लाला शंकरदास अभी तक मीठी नींद ले रहे थे। खाँसते हुए बच्चे और कराहते हुए बूढ़े उनके औषधालय के द्वार पर जमा हो चले थे। इस भीड़-भभ्भड़ से कुछ दूर पर दो-तीन सुंदर किंतु मुरझाये हुए नवयुवक टहल रहे थे और वैद्य जी से एकांत में कुछ बातें किया चाहते थे। इतने में पंडित देवदत्त नंगे सिर नंगे बदन लाल आँखें डरावनी सूरत कागज का एक पुलिंदा लिये दौड़ते हुए आये और औषधालय के द्वार पर इतने जोर से हाँक लगाने लगे कि वैद्य जी चौंक पड़े और कहार को पुकार कर बोले कि दरवाजा खोल दे। कहार महात्मा बड़ी रात गये किसी बिरादरी की पंचायत से लौटे थे। उन्हें दीर्घ-निद्रा का रोग था जो वैद्य जी के लगातार भाषण और फटकार की औषधियों से भी कम न होता था। आप ऐंठते हुए उठे और किवाड़ खोल कर हुक्का-चिलम की चिंता में आग ढूँढ़ने चले गये। हकीम जी उठने की चेष्टा कर रहे थे कि सहसा देवदत्त उनके सम्मुख जा कर खड़े हो गये और नोटों का पुलिंदा उनके आगे पटक कर बोले-वैद्य जी ये पचहत्तर हजार के नोट हैं। यह आपका पुरस्कार और आपकी फीस है। आप चल कर गिरिजा को देख लीजिए और ऐसा कुछ कीजिए कि वह केवल एक बार आँखें खोल दे। यह उसकी एक दृष्टि पर न्योछावर है-केवल एक दृष्टि पर। आपको रुपये मनुष्य की जान से प्यारे हैं।

वे आपके समक्ष हैं। मुझे गिरिजा की एक चितवन इन रुपयों से कई गुनी प्यारी है। वैद्य जी ने लज्जामय सहानुभूति से देवदत्त की ओर देखा और केवल इतना कहा - मुझे अत्यंत शोक है सदैव के लिए तुम्हारा अपराधी हूँ। किंतु तुमने मुझे शिक्षा दे दी। ईश्वर ने चाहा तो ऐसी भूल कदापि न होगी। मुझे शोक है। सचमुच है ! ये बातें वैद्य जी के अंतःकरण से निकली थी।

मुंशी प्रेमचंद



***

सतर्कता जागरूकता सप्ताह – 2022

शाखा कार्यालय राजकोट द्वारा दिनांक 31.10.2022 से दिनांक 06.11.2022 तक सतर्कता जागरूकता सप्ताह मनाया गया, जिसकी थीम "भ्रष्टाचार मुक्त भारत – विकसित भारत" के अंतर्गत विविध कार्यक्रम का आयोजन किया गया।



दिनांक 31.10.2022 को सतर्कता जागरूकता सप्ताह 2022 के अंतर्गत सभी अधिकारी एवं कर्मचारियों द्वारा "सत्यनिष्ठा प्रतिज्ञा" ली गई। कर्मचारियों के लिए सत्यनिष्ठा प्रतिज्ञा का पठन करते हुए उप महा प्रबन्धक एवं वरिष्ठ प्रबन्धक (वित्त) महोदय।



दिनांक 01.11.2022 को सतर्कता जागरूकता सप्ताह 2022 के अंतर्गत सतर्कता अनुभाग द्वारा स्लोगन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। प्रतियोगिता में सहभागी अधिकारी एवं कर्मचारीगण।



दिनांक 03.11.2022 को सतर्कता जागरूकता सप्ताह 2022 के अंतर्गत सतर्कता अनुभाग द्वारा सायकलथोन का आयोजन किया गया। सहभागी अधिकारी एवं कर्मचारीगण।



दिनांक 04.11.2022 को सतर्कता जागरूकता सप्ताह 2022 के अंतर्गत सतर्कता अनुभाग द्वारा किसानों की सभा का आयोजन किया गया। इसके के अंतर्गत श्री स्वप्नील वि. दडमल, उप महा प्रबन्धक द्वारा किसान भाइयों को निगम के बारे में जानकारी देते हुए जागरुक किया गया।



किसान सभा में अपने विचार व्यक्त करते किसान भाई।



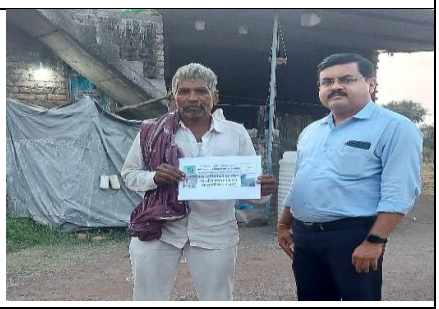
***

भारतीय कपास निगम लिमिटेड, राजकोट के अधिकारी एवं कर्मचारियों द्वारा सौराष्ट्र एवं कच्छ के कपास किसानो तक पहुँचने के लिए चलायी गयी मुहिम

भारतीय कपास निगम लिमिटेड, किसानों का दोस्त किसानों के घर तक।


































ास किसानों का दोस्त भारतीय कपास निगम किसानों के घर तक









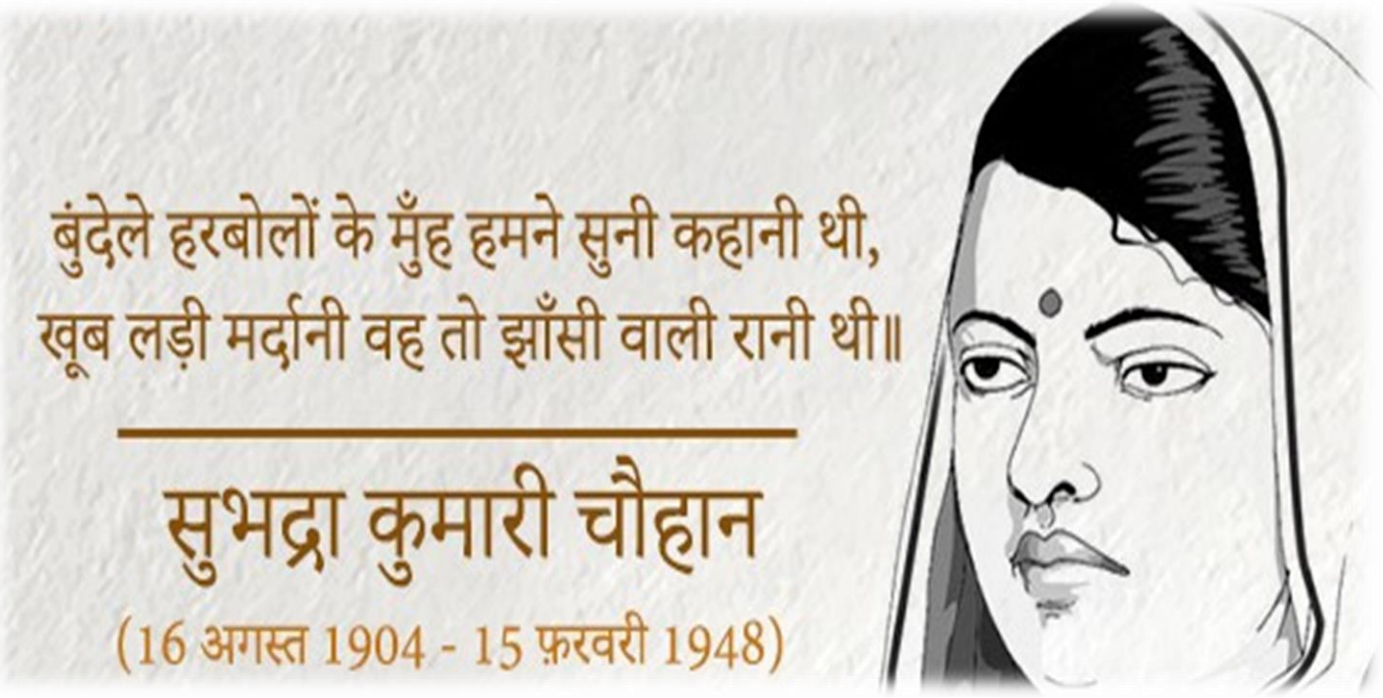


भारती वन्दना



सूर्यकांत त्रिपाठी "निराला"

भारति, जय, विजय करे कनक-शस्य-कमल धरे!
लंका पदतल-शतदल गर्जितोर्मि सागर-जलधोता शुचि
चरण-युगल स्तव कर बहु अर्थ भरे!
तरु-तण वन-लता-वसनअंचल में खचित सुमन गंगा
ज्योतिर्जल-कण धवल-धार हार लगे!
मुकुट शुभ्र हिम-तुषार प्राण प्रणव ओंकार ध्वनित दिशाएँ
उदार शतमुख-शतरव-मुखरे!



भारतीय कपास निगम लिमिटेड

THE COTTON CORPORATION OF INDIA LIMITED

(वस्त्र मंत्रालय – भारत सरकार का उपक्रम)

(GOVERNMENT OF INDIA UNDERTAKING – MINISTRY OF TEXTILES)

शाखा कार्यालय/ BRANCH OFFICE : राजकोट/RAJKOT